९. नहीं कुछ इससे बढ़कर

– सुमित्रानंदन पंत

परिचय

जन्म : १९००, कौसानी, अल्मोड़ा, (उत्तराखंड)
मृत्यु : १९७७
परिचय : 'पंत' जी को प्रकृति से बहुत लगाव था । प्रकृति सौंदर्य के अनुपम चितेरे तथा कोमल भावनाओं के कवि के रूप में आपकी पहचान है । आप बचपन से सुंदर रचनाएँ किया करते थे । आपको 'भारतीय ज्ञानपीठ', 'सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार', 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' और 'पद्‌मभूषण' सम्मान से अलंकृत किया गया ।
प्रमुख कृतियाँ : 'वीणा', 'पल्लव', 'गुंजन', 'मानसी', 'वाणी', 'सत्यकाम' आदि ।

पद्‌य संबंधी

प्रस्तुत गीत में कवि सुमित्रानंदन पंत जी ने माँ, कृषक, कलाकार, कवि, बलिदानी पुरुष एवं लोक के महत्त्व को स्थापित किया है । आपका मानना है कि उपरोक्त सभी व्यक्ति, समाज, देश के हित में सदैव तत्पर रहते हैं । अतः इनकी पूजा से बढ़कर दूसरी कोई पूजा नहीं है ।

कल्पना पल्लवन

'मन:शांति के लिए चिंतन-मनन आवश्यक है' इसपर अपने विचार लिखो ।

प्रसव वेदना सह जब जननी
हृदय स्वप्न निज मूर्त बनाकर
स्तन्यदान दे उसे पालती,
पग-पग नव शिशु पर न्योछावर
नहीं प्रार्थना इससे सुंदर !

शीत-ताप में जूझ प्रकृति से
बहा स्वेद, भू-रज कर उर्वर,
शस्य श्यामला बना धरा को
जब भंडार कृषक देते भर
नहीं प्रार्थना इससे शुभकर !

कलाकार-कवि वर्ण-वर्ण को
भाव तूलि से रच सम्मोहन
जब अरूप को नया रूप दे
भरते कृति में जीवन स्पंदन
नहीं प्रार्थना इससे प्रियतर !

सत्य-निष्ठ, जन-भू प्रेमी जब
मानव जीवन के मंगल हित
कर देते उत्सर्ग प्राण निज
भू-रज को कर शोणित रंजित
नहीं प्रार्थना इससे बढ़कर !

चख-चख जीवन मधुरस प्रतिक्षण
विपुल मनोवैभव कर संचित,
जन मधुकर अनुभूति द्रवित जब
करते भव मधु छत्र विनिर्मित
नहीं प्रार्थना इससे शुचितर !

— ० —

शब्द वाटिका

जननी = माँ
स्वेद = पसीना
भू-रज = मिट्टी
उर्वर = उपजाऊ
शस्य = नई कोमल घास
श्यामला = साँवली, हरी-भरी
कृषक = किसान
तूलि = कूँची, तूलिका

सम्मोहन = मोहित करना
स्पंदन = कंपन
उत्सर्ग = बलिदान
शोणित रंजित = रक्त से भीगा हुआ
विनिर्मित = बनाया हुआ
शुचितर = अधिक पवित्र

मुहावरा

न्योछावर करना = वारी जाना, समर्पित करना

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-**

(१) संजाल पूर्ण करो :

गीत की विशेषताएँ

(२) कृति करो :

\---------

१. धरती को उपजाऊ बनाने वाला

२. अनाज के भंडारों को भरने वाला

(३) अंतिम चार पंक्तियों का अर्थ लिखो ।

(४) कविता में उल्लिखित मानव के विभिन्न रूप लिखो:

१. -----------
२. -----------
३. -----------
४. -----------

भाषा बिंदु

निम्न शब्दों के लिंग तथा वचन बदलकर वाक्यों में प्रयोग करो :

लिंग - कवि, माता, भाई, लेखक
वचन - दुकान, प्रार्थना, अनुभूति, कपड़ा, नेता

उपयोजित लेखन

'सड़क दुर्घटनाएँ : कारण एवं उपाय' निबंध लिखो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

'राष्ट्रसंत तुकडो जी के सर्वधर्मसमभाव' पर आधारित गीत पढ़ो और इसपर आधारित चार्ट बनाओ ।

J22N4H

व्याकरण विभाग

शब्द भेद

(१) विकारी शब्द और उनके भेद

संज्ञा	सर्वनाम	विशेषण	क्रिया
जातिवाचक	पुरुषवाचक	गुणवाचक	सकर्मक
व्यक्तिवाचक	निश्चयवाचक अनिश्चयवाचक	परिमाणवाचक १.निश्चित २.अनिश्चित	अकर्मक
भाववाचक	निजवाचक	संख्यावाचक १. निश्चित २. अनिश्चित	संयुक्त
द्रव्यवाचक	प्रश्नवाचक	सार्वनामिक	प्रेरणार्थक
समूहवाचक	संबंधवाचक	–	सहायक

(२) अविकारी शब्द(अव्यय)

- क्रियाविशेषण अव्यय
- संबंधसूचक अव्यय
- समुच्चयबोधक अव्यय
- विस्मयादिबोधक अव्यय

(३) क्रिया के काल

- वर्तमान काल
  - सामान्य
  - अपूर्ण
  - पूर्ण
- भूतकाल
  - सामान्य
  - अपूर्ण
  - पूर्ण
- भविष्य काल
  - सामान्य
  - अपूर्ण
  - पूर्ण

(४) वाक्य के प्रकार

रचना की दृष्टि से

१. साधारण
२. मिश्र
३. संयुक्त

अर्थ की दृष्टि से

१. विधानार्थक
२. निषेधार्थक
३. प्रश्नार्थक
४. आज्ञार्थक
५. विस्मयादिबोधक
६. संदेशसूचक

(५) मुहावरों/कहावतों का प्रयोग/चयन करना
(६) वाक्य शुद्धीकरण
(७) सहायक क्रिया पहचानना
(८) प्रेरणार्थक क्रिया पहचानना
(९) कारक
(१०) विरामचिह्न
(११) वर्णविच्छेद

शब्द संपदा – (पाँचवीं से आठवीं तक)

शब्दों के लिंग, वचन, विलोमार्थक, समानार्थी, पर्यायवाची, शब्द युग्म, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द, समोच्चारित मराठी-हिंदी भिन्नार्थक शब्द, कठिन शब्दों के अर्थ, उपसर्ग-प्रत्यय पहचानना/अलग करना, कृदंत-तद्धित बनाना, मूल शब्द अलग करना ।

उपयोजित लेखन (रचना विभाग)

✻ पत्रलेखन

अपने विचारों, भावों को शब्दों के द्‌वारा लिखित रूप में अपेक्षित व्यक्ति तक पहुँचा देने वाला साधन है पत्र ! हम सभी 'पत्रलेखन' से परिचित हैं ही । आजकल हम नई-नई तकनीक को अपना रहे हैं । पत्रलेखन में भी आधुनिक तंत्रज्ञान/तकनीक का उपयोग करना समय की माँग है । आने वाले समय में आपको ई-मेल भेजने के तरीके से भी अवगत होना है । अतः इस वर्ष से पत्र के नये प्रारूप के अनुरूप ई-मेल की पद्‌धति अपनाना अपेक्षित है ।

✻ पत्र लेखन के मुख्य दो प्रकार हैं, औपचारिक और अनौपचारिक ।

गद्‌य आकलन (प्रश्न निर्मिति)

• दिए गए परिच्छेद (गद्‌यांश) को पढ़कर उसी के आधार पर पाँच प्रश्नों की निर्मिति करनी है । प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में हों ऐसे ही प्रश्न बनाए जाएँ । • प्रश्न के उत्तर लिखना अपेक्षित नहीं है ।

✻ प्रश्न ऐसे हों : • तैयार प्रश्न सार्थक एवं प्रश्न के प्रारूप में हो । • प्रश्न रचना और प्रश्नों के उत्तर दिए गए गद्‌यांश पर आधारित हो । • रचित प्रश्न के अंत में प्रश्नचिह्न लगाना आवश्यक है । • प्रश्न समूचे परिच्छेद पर आधारित हों ।

मनुष्य को अपने जीवन की आवश्यकताएँ पूर्ण करने के लिए बहुत कुछ श्रम करना पड़ता है । इस श्रम से थके हुए मन और मस्तिष्क को विश्राम की आवश्यकता होती है, शरीर पर भी इस श्रम का प्रभाव पड़ता है । इसलिए वह भी विश्राम माँगता है किंतु यदि मनुष्य आलसी की भाँति सीधा चारपाई पर लेट जाए तो इससे वह थकान भले ही उतार ले, परंतु वह नया उत्साह नहीं पा सकता जो उसे अगले दिन फिर से काम करने की शक्ति प्रदान कर सके । यह तभी हो सकता है जब दिन भर के काम से थके मन को हँस-खेलकर बहला लिया जाए । आकर्षक गीत सुनकर या सुंदर दृश्य देखकर दिन भर पढ़ने अथवा सोचने से दिमाग पर जो प्रभाव पड़ा हो, उसे निकालकर मस्तिष्क को उस चिंता से दूर कर देना चाहिए । इसका परिणाम यह होगा कि मनुष्य पुनः विषय पर नई शक्ति से सोच-विचार कर सकेगा ।

प्रश्नः

१. ____________________

२. ____________________

३. ____________________

४. ____________________

५. ____________________

✻ वृत्तांत लेखन : वृत्तांत का अर्थ है- घटी हुई घटना का विवरण/रपट/अहवाल लेखन । यह रचना की एक विधा है । वृत्तांत लेखन एक कला है, जिसमें भाषा का कुशलतापूर्वक प्रयोग करना होता है । यह किसी घटना, समारोह का विस्तृत वर्णन है जो किसी को जानकारी देने हेतु लिखा होता है । इसे रिपोर्ताज, इतिवृत्त, अहवाल आदि नामों से भी जाना जाता है । **वृत्तांत लेखन के लिए ध्यान रखने योग्य बातें :** • वृत्तांत में घटित घटना का ही वर्णन करना है । • घटना, काल, स्थल का उल्लेख अपेक्षित होता है । साथ-ही-साथ घटना जैसी घटित हुई उसी क्रम से प्रभावी और प्रवाही भाषा में वर्णित हो । • आशयपूर्ण, उचित तथा आवश्यक बातों को ही वृत्तांत में शामिल करें । • वृत्तांत का समापन उचित पद्‌धति से हो ।

✻ कहानी लेखन : कहानी सुनना-सुनाना आबाल वृद्‌धों के लिए रुचि और आनंद का विषय होता है । कहानी लेखन विद्‌यार्थियों की कल्पनाशक्ति, नवनिर्मिति व सृजनशीलता को प्रेरणा देता है ।

कहानी लेखन में निम्न बातों की ओर विशेष ध्यान दें : • शीर्षक, कहानी के मुद्‌दों का विस्तार और कहानी से प्राप्त सीख/प्रेरणा/संदेश ये कहानी लेखन के अंग हैं । कहानी भूतकाल में लिखी जाए । कहानी के संवाद प्रसंगानुकूल वर्तमान या भविष्यकाल में हो सकते हैं । संवाद अवतरण चिह्न में लिखना अपेक्षित है । • कहानी लेखन की शब्द सीमा सौ शब्दों तक हो । • कहानी का शीर्षक लिखना आवश्यक होता है । शीर्षक छोटा, आकर्षक, अर्थपूर्ण और सारगर्भित होना चाहिए । • कहानी में कालानुक्रम, घटनाक्रम और प्रवाह होना आवश्यक है । • घटनाएँ शृंखलाबद्‌ध होनी चाहिए । • कहानी लेखन में आवश्यक विरामचिह्नों का प्रयोग करना न भूलें । • कहानी लेखन करते समय अनुच्छेद बनाएँ । • कहानी का विस्तार करने के लिए उचित मुहावरे, कहावतें, सुवचन, पर्यायवाची शब्द आदि का प्रयोग करें ।

✻ विज्ञापन : वर्तमान युग स्पर्धा का है और विज्ञापन इस युग का महत्त्वपूर्ण अंग है । आज संगणक तथा सूचना प्रौद्‌योगिकी के युग में, अंतरजाल (इंटरनेट) एवं भ्रमणध्वनि (मोबाइल) क्रांति के काल में विज्ञापन का क्षेत्र विस्तृत होता जा रहा है । विज्ञापनों के कारण किसी वस्तु, समारोह, शिविर आदि के बारे में जानकारी आकर्षक ढंग से समाज तक पहुँच जाती है । लोगों के मन में रुचि निर्माण करना, ध्यान आकर्षित करना विज्ञापन का मुख्य उद्‌देश्य होता है ।

विज्ञापन लेखन करते समय निम्न मुद्दों की ओर ध्यान दें : • कम-से-कम शब्दों में अधिकाधिक आशय व्यक्त हो । • नाम स्पष्ट और आकर्षक ढंग से अंकित हो । • विषय के अनुरूप रोचक शैली हो । आलंकारिक, काव्यमय, प्रभावी शब्दों का उपयोग करते हुए विज्ञापन अधिक आकर्षक बनाएँ । • किसी में उत्पाद संबंधी विज्ञापन में उत्पाद की गुणवत्ता महत्त्वपूर्ण होती है ।

✻ अनुवाद लेखन : एक भाषा का आशय दूसरी भाषा में लिखित रूप में व्यक्त करना ही अनुवाद कहलाता है । अनुवाद करते समय लिपि और लेखन पद्‌धति में अंतर आ सकता है परंतु आशय, मूलभाव को जैसे कि वैसे रखना पड़ता है ।

अनुवाद : शब्द, वाक्य और परिच्छेद का करना है ।

✻ निबंध लेखन : निबंध लेखन एक कला है । निबंध का शाब्दिक अर्थ होता है 'सुगठित अथवा 'सुव्यवस्थित रूप में बँधा हुआ' । साधारण गद्‌य रचना की अपेक्षा निबंध में रोचकता और सजीवता पाई जाती है । निबंध गद्‌य में लिखी हुई रचना होती है, जिसका आकार सीमित होता है । उसमें किसी विषय का प्रतिपादन अधिक स्वतंत्रतापूर्वक और विशेष अपनेपन और सजीवता के साथ किया जाता है । एकसूत्रता, व्यक्तित्व का प्रतिबिंब, आत्मीयता, कलात्मकता निबंध के तत्त्व माने जाते हैं । इन तत्त्वों के आधार पर निबंध की रचना की जाती है । वर्णनात्मक, विचारात्मक आत्मकथनपरक, चरित्रात्मक तथा कल्पनाप्रधान ये निबंध के पाँच प्रमुख भेद हैं ।

भावार्थ – पाठ्‌यपुस्तक पृष्ठ क्र. २३ पहली इकाई, पाठ क्र ९. दोहे और पद– संत कबीर, भक्त सूरदास

दोहे : कबीर दास जी कहते हैं कि जैसा भोजन करोगे वैसा ही मन होगा । यदि इमानदारी की कमाई खाओगे तो व्यवहार भी इमानदारी वाला ही होगा । बेइमानी के भोजन करने से मन में भी बेइमानी आएगी । उसी तरह जैसा पानी पीओगे वैसी भाषा भी होगी ।

मन के अहंकार को मिटाकर, ऐसे मीठे और नम्र वचन बोलो, जिससे दूसरे लोग सुखी हों और स्वयं भी सुखी हो ।

जब मैं इस दुनिया में बुराई खोजने निकला तो कोई बुरा नहीं मिला । पर फिर जब मैंने अपने मन में झाँककर देखा तो पाया कि दुनिया में मुझसे बुरा और कोई नहीं हैं ।

पद : बालक कृष्ण माँ यशोदा से कहते हैं कि मैया मेरी चोटी कब बढ़ेगी ? कितना समय मुझे दूध पीते हो गया पर यह चोटी आज भी छोटी ही बनी हुई है । तू तो यह कहती है कि दाऊ भैया की चोटी के समान यह लंबी और मोटी हो जाएगी और कंघी करते, गूँथते तथा स्नान कराते समय यह नागिन के समान भूमि तक लोटने (लटकने) लगेगी । तू मुझे बार-बार कच्चा दूध पिलाती है, माखन-रोटी नहीं देती है । सूरदास जी कहते हैं कि दोनों भाई चिरंजीवी हों और हरि-हलधर की जोड़ी बनी रहे ।

—— ० ——